कल–कल करता पानी

रामनाथ सिंह
रा.ज.सं.,रूड़की

झर–झर करता झरना बहता
कल–कल करता पानी

पर्वतों को झिल–मिल करता
झीलों में भर जाता, पौधों को देता जिन्दगानी
झर–झर करता झरना बहता
कल–कल करता पानी

सूरज की किरणों से उड़ता
चन्द्रमा से पाता शीतलता
बादलों के संग घुल–मिल कर
हरियाली बरसाता पानी
झर–झर करता झरना बहता
कल–कल करता पानी

लाल रंग में मिल कर गाता
अमर शहीदों की ये कहानी
झर–झर करता झरना बहता
कल–कल करता पानी

सफेद रंग में ये मिलता
शान्ति दूत बन जाता पानी
झर–झर करता झरना बहता
कल–कल करता पानी

हरे रंग में जब ये मिलता
हरियाली बरसाता धान धन
उपजाता फल फूल खिलाता
झर–झर करता झरना बहता
कल–कल करता पानी

चमक–चमक कर बिजली गाती
इन्द्र धनुष बन जाता
उमड़–उमड़ कर वर्षा होती
सब को खूब भिगाता पानी

झर–झर करता झरना बहता
कल–कल करता पानी।।